

Chapter-3

बालकौतुकम्

प्रश्न और उत्तर

प्रश्न 1. संस्कृतभाषया उत्तराणि लिखत -

- (क) 'उत्तररामचरितम्' इति नाटकस्य रचयिता कः ?
- (ख) नेपथ्ये कोलाहलं श्रुत्वा जनकः किं कथयति ?
- (ग) लवः कौशल्यां रामभद्रं च कथमनुसरति ?
- (घ) बटवः अश्वं कथं वर्णयन्ति ?
- (ङ) लवः कथं जानाति यत् अयम् आश्वमेधिकः अश्वः ?
- (च) राजपुरुषस्य तीक्ष्णतरा आयुधश्रेण्यः किं न सहन्ते ?

उत्तरम् :

- (क) भवभूतिः 'उत्तररामचरितम्' इति नाटकस्य रचयिता।
- (ख) नेपथ्ये कोलाहलं श्रुत्वा जनकः कथयति-"शिष्टानध्यायः इति क्रीडतां वटूनां कोलाहलः"।
- (ग) लवः कौशल्यां रामभद्रं च देहबन्धनेन स्वरेण च अनुसरति।
- (घ) बटवः अश्वं भूतविशेषं वर्णयन्ति।
- (ङ) लवः अश्वमेध-काण्डेन जानाति यत् अयम् आश्वमेधिकः अश्वः।
- (च) राजपुरुषस्य तीक्ष्णतराः आयुधश्रेण्यः दृप्तां वाचं न सहन्ते।

प्रश्न 2. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत

- (क) अश्वमेध इति नाम क्षत्रियाणां महान् उत्कर्षनिकषः।
- (ख) हे बटवः! लोष्ठैः अभिघ्नन्तः उपनयत एनम् अश्वम्।
- (ग) रामभद्रस्य एषः दारकः अस्माकं लोचने शीतलयति।
- (घ) उत्पथैः मम मनः पारिप्लवं धावति।
- (ङ) अतिजवेन दूरमतिक्रान्तः स चपलः दृश्यते।
- (च) विस्फारितशरासनाः आयुधश्रेण्यः कुमारं तर्जयन्ति।
- (छ) निपुणं निरूप्यमाणः लवः मुखचन्द्रेण सीतया संवदत्येव।

उत्तरम् :

- (क) अश्वमेध इति नाम केषां महान् उत्कर्ष-निकषः ?
 (ख) हे बटवः ! कथं अभिघ्नन्तः उपनयत एनम् अश्वम् ?
 (ग) रामभद्रस्य एष दारकः अस्माकं किं शीतलयति ?
 (घ) उत्पथैः कस्य मनः पारिप्लवं धावति ?
 (ङ) अतिजवेन दूरम् अतिक्रान्तः सः कथं दृश्यते ?
 (च) विस्फारित-शरासनाः आयुधश्रेण्यः कं तर्जयन्ति ?
 (छ) निपुणं निरुप्यमाणः लवः मुखचन्द्रेण कया संवदति एव ?

प्रश्न 3. सप्रसङ्ग-व्याख्यां कुरुत -

- (क) सर्वक्षत्रपरिभावी महान् उत्कर्षनिकषः।
 (ख) किं व्याख्यानैर्ब्रजति स पुनरमेहेहि याम।
 (ग) सुलभसौख्यमिदानीं बालत्वं भवति
 (घ) झटिति कुरुते दृष्टः कोऽयं दृशोरमृताञ्जनम् ?

उत्तरम् :

(क) सर्वक्षत्रपरिभावी महान् उत्कर्षनिकषः।

प्रसंगः - प्रस्तुत पंक्ति 'लवकौतुकम्' पाठ से संकलित है। वाल्मीकि आश्रम में 'लव' के साथ ब्रह्मचारी-सहपाठी खेल रहे हैं। इसी समय कुछ बटुगण आकर, लव को आश्रम के निकट अश्वमेध घोड़े की सूचना देते हैं। यह अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा रक्षकों से घिरा हुआ है। लव उस अश्वमेध यज्ञ के महत्त्व को अपने मन में विचार करता हुआ कहता है

व्याख्या - यह अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा है। यह क्षत्रियों की शक्ति का सूचक होता है। क्षत्रिय राजा, अपने बलवान् शत्रु राजा पर अपनी विजय की धाक जमाने के लिए इसे छोड़ता है। वास्तव में यह घोड़ा सभी शत्रुओं पर प्रभाव डालने वाले उत्कर्ष श्रेष्ठपन का सूचक होता है।

(ख) किं व्याख्यानैर्ब्रजति स पुनरमेहेहि यामः।

प्रसंगः - प्रस्तुत पंक्ति 'लवकौतुकम्' पाठ से संकलित है। वाल्मीकि आश्रम के निकट राम के अश्वमेध का घोड़ा घूमते-घूमते आ गया है। वहाँ खेलते हुए

ब्रह्मचारी उस विशेष प्राणी को देखकर भागते हुए आश्रम में आते हैं और 'लव' के सामने उसका वर्णन करते हैं

व्याख्या - यह प्राणिविशेष लम्बी पूँछ को बारबार हिला रहा है। घास खाता है, लीद करता है, लम्बी गर्दन है, चार खुरों वाला है। अधिक कहने का समय नहीं है, यह जन्तु तेजी से आश्रम से दूर भागा जा रहा है, चलो आओ हम भी उसे देखते हैं। भाव यह है कि उसे बताने की अपेक्षा उसे देखना अधिक आनन्ददायक होगा।

(ग) सुलभं सौख्यम् इदानीं बालत्वं भवति।।

प्रसंगः - प्रस्तुत पंक्ति 'लवकौतुकम्' पाठ से उद्धृत है। वाल्मीकि आश्रम में अतिथि के रूप में जनक, कौशल्या और अरुन्धती आए हुए हैं। उनके आने से आश्रम में अवकाश कर दिया गया है और सभी छात्रगण खेलते हुए शोर मचा रहे हैं। इस शोर को सुनकर, कौशल्या जनक को बता रही हैं

व्याख्या - बाल्यकाल में सुख के साधन सुलभ होते हैं। बच्चों को मजा लेने के लिए किसी खिलौने आदि की आवश्यकता नहीं होती। वे तो साधारण से खेल-कूद और हँसी-मजाक द्वारा ही सुख प्राप्त कर लेते हैं। सुख प्राप्ति के लिए उन्हें बड़े बहुमूल्य क्रीडा-साधनों की आवश्यकता नहीं होती। ये ब्रह्मचारी अपने बचपन का आनन्द ले रहे हैं।

(घ) झटिति कुरुते दृष्टः कोऽयं दृशोः अमृताञ्जनम्।

प्रसंगः - प्रस्तुत पंक्ति 'लवकौतुकम्' पाठ से संकलित है। वाल्मीकि आश्रम में, राम के पुत्र 'लव' को देखकर, अरुन्धती (वशिष्ठ की पत्नी) अत्यन्त प्रभावित है। वह उसके रूप सौन्दर्य को देखकर, राम के बचपन को स्मरण करती हुई जनक तथा कौशल्या से कहती है -

व्याख्या - यह बालक मेरे हृदय में अत्यन्त स्नेहभाव पैदा कर रहा है। इसे देखकर मुझे ऐसा लग रहा है, जैसे कि बचपन के राम को देख रही हूँ। यह प्रिय बालक देखने पर मुझे इतना आकृष्ट कर रहा है, मानो मेरी आँखों में अमृत का अंजन लगा दिया है। इसे देखकर मुझे अत्यन्त तृप्ति मिल रही है।

प्रश्न 4. अधोलिखितानि कथनानि कः कं कथयति ?

उत्तरसहितम् -

कथनानि	कः	कं प्रति
(क) अस्ति ते माता ? स्मरसि वा तातम् ?	कौसल्या	लवम्
(ख) दिष्ट्या न केवलम् उत्सङ्गः मनोरथोऽपि मे पूरितः ।	अरुन्धती	लवम्
(ग) वत्सायाश्च रघूद्वहस्य च शिशावस्मिन्- भिव्यज्यते ।	जनकः	कौशल्याम्
(घ) सोऽयमधुनाऽस्माभिः स्वयं प्रत्यक्षीकृतः ।	बटवः	लवम्
(ङ) इतोऽन्यतो भूत्वा प्रेक्षामहे तावत् पलायमानं दीर्घायुषम् ।	कौशल्या	अरुन्धतीम्
(च) धिक् चपल ! किमुक्तवानसि ?	राजपुरुषः	लवम्

प्रश्न 5. अधोलिखितवाक्यानां रिक्तस्थानपूर्ति निर्देशानुसारं कुरुत -

(क) क एषः रामभद्रस्य मुग्धललितैरङ्गैर्दारकोऽस्माकं लोचने ।

(क्रियापदेन)

(ख) एष मे सम्मोहनस्थिरमपि मनः हरति । (कर्तृपदेन)

(ग) ! इतोऽपि तावदेहि ! (सम्बोधनेन)

(घ) 'अश्वोऽश्व' नाम पशुसमाम्राये साङ्ग्रामिके च पठ्यते ।

(अव्ययेन)

(ङ) युष्माभिरपि तत्काण्डं एव हि । (कृदन्तपदेन)

(च) एष वो लवस्य प्रणामपर्यायः । (करणपदेन)

उत्तरम् :

(क) क एषः अनुसरति रामभद्रस्य मुग्धललितैरङ्गैर्दारकोऽस्माकं लोचने शीतलयति ।

(ख) एष बलवान् मे सम्मोहनस्थिरमपि मनः हरति ।

(ग) जात ! इतोऽपि तावदेहि !

(घ) 'अश्वोऽश्व' इति नाम पशुसमाम्राये सानामिके च पठ्यते ।

(ङ) युष्माभिरपि तत्काण्डं पठितम् एव हि ।

(च) एष वो लवस्य शिरसा प्रणामपर्यायः ।

प्रश्न 6. अधः समस्तपदानां विग्रहाः दत्ताः। उदाहरणमनुसृत्य समस्तपदानि रचयत, समासनामापि च लिखत -

उदाहरणम् - पशूनां समाम्नायः, तस्मिन् पशुसमाम्नाये - षष्ठीतत्पुरुषः

उत्तरसहितम् :

(क) विनयेन शिशिरः	विनयशिशिरः	तृतीयातत्पुरुषः
(ख) अयस्कान्तस्य (धातोः) शकलः	अयस्कान्तशकलः	षष्ठीतत्पुरुषः
(ग) दीर्घा ग्रीवा यस्य सः	दीर्घग्रीवः	बहुव्रीहिः
(घ) मुखम् एव पुण्डरीकम्	मुखपुण्डरीकम्	कर्मधारयः
(ङ) पुण्यः चासौ अनुभावः	पुण्यानुभावः	कर्मधारयः
(च) न स्खलितम्	अस्खलितम्	नञ्तत्पुरुषः

प्रश्न 7.

अधोलिखित पारिभाषिक शब्दानां समुचितार्थेन मेलनं कुरुत -

(क) नेपथ्ये	(क) प्रकटरूप में
(ख) आत्मगतम्	(ख) देखकर
(ग) प्रकाशम्	(ग) पर्दे के पीछे
(घ) निरूप्य	(घ) अपने मन में
(ङ) उत्सङ्गो गृहीत्वा	(ङ) प्रवेश करे
(च) प्रविश्य	(च) अपने मन में
(छ) सगर्वम्	(छ) गोद में बिठा कर
(ज) स्वगतम्	(ज) गर्व के साथ

उत्तरम् :

(क) नेपथ्ये	पर्दे के पीछे
(ख) आत्मगतम्	अपने मन में
(ग) प्रकाशम्	प्रकट रूप में
(घ) निरूप्य	देखकर
(ङ) उत्सङ्गो गृहीत्वा	गोद में बिठा कर
(च) प्रविश्य	प्रवेश करके
(छ) सगर्वम्	गर्व के साथ
(ज) स्वगतम्	अपने मन में

प्रश्न 8. पाठमाश्रित्य हिन्दीभाषया लवस्य चारित्रिकवैशिष्ट्यं लिखत -

उत्तरम् :

(बालक लव का चरित्र चित्रण)

लव महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में पालित-पोषित, राजा राम द्वारा निर्वासित भगवती सीता के जुड़वा पुत्रों में से एक है। वह आकृति में बिल्कुल राम जैसा है, उसकी आँखों में राम की आँखों जैसी चमक है। यही कारण है कि जब महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में राजर्षि जनक, कौशल्या और अरुन्धती अतिथि के रूप में पधारते हैं; तब खेलते हुए बालकों के बीच कौशल्या बालक लव को देखकर राम के बचपन की याद में खो जाती है। तीनों की बातचीत से पता लगता है कि लव का मुख सीता के मुखचन्द्र की भाँति है। उसका मांसल और तेजस्वी शरीर राम के तुल्य है। उसका स्वर बिल्कुल राम से मिलता-जुलता है।

लव शिष्टाचार में कुशल है। वह गुरुजनों का आदर करना जानता है और जनक आदि के आश्रम में पधारने पर उन्हें सिर झुकाकर प्रणाम करता है। लव ने महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में शस्त्र और शास्त्र दोनों की शिक्षा प्राप्त की है। इसीलिए जब चन्द्रकेतु द्वारा रक्षित राजा राम का अश्वमेधीय अश्व आश्रम में प्रवेश करता है; तब लव इस घोड़े को देखते ही पहचान जाता है कि यह अश्वमेधीय अश्व है, क्योंकि उसने युद्धशास्त्र तथा पशु-समाम्नाय में इस अश्व के बारे में पढ़ा हुआ है।

प्रश्न 9.

अधोलिखितेषु श्लोकेषु छन्दोनिर्देशः क्रियताम् -

(क) महिम्नामेतस्मिन् विनयशिशिरो मौग्ध्यमसृणो।

(ख) वत्सायाश्च रघूद्वहस्य च शिशावमिस्मन्नभिव्यज्यते।

(ग) पश्चात्पुच्छं वहति विपुलं तच्च धूनोत्यजस्तम्।

उत्तरम् :

(क) शिखरिणी छन्दः।

बालकौतुकम्

(ख) शार्दूलविक्रीडितम् छन्दः।

(ग) मन्दाक्रान्ता छन्दः।

प्रश्न 10.

पाठमाश्रित्य उत्प्रेक्षालङ्कारस्य उपमालङ्कारस्य च उदाहरणं लिखत –

उत्तरम् :

(क) उत्प्रेक्षालङ्कारस्य उदाहरणम् -

वत्सायाश्च रघूद्वहस्य च शिशावस्मिन्नभिव्यज्यते,
संवृत्तिः प्रतिबिम्बितेव निखिला सैवाकृतिः सा द्युतिः।

(ख) उपमालङ्कारस्य उदाहरणम् -

मनो मे संमोहस्थिरमपि हरत्येष बलवान्,
अयोधातुर्यद्वत्परिलघुरयस्कान्तशकलः॥